लनुपते,नुमा

SECTION—I

खण्ड—I

1. भारोपीय भाषा परिवारक अर्थ, नामकरणकें स्पष्ट करैत मैथिलीक स्थान निरूपित करू। 50

2. मैथिली भाषाक ऐतिहासिक विकासक्रमकें स्पष्ट करैत भाषाक महत्व पर विचार करू। 50

3. हिन्दी एवं बंगला भाषाक संग मैथिली भाषाक सम्बन्धक वैशिष्ट्यक उल्लेख करैत अन्तरकें स्पष्ट करू। 50

4. निबंधक स्वरूपकें स्पष्ट करैत विकासक रूपरेखा प्रस्तुत करू। 50

5. आधुनिक मैथिली कविताक प्रवृत्ति पर विचार करू। 50

6. नारी-विमर्शक दृष्टिकोणसँ आधुनिक मैथिली लघु-कथाक समीक्षा करू। 50

SECTION—II

खण्ड—II

7. विद्यापतिक शिव-विषयक गीतमे मिथिलाक संस्कृतिक अभिव्यक्ति भेल अछि—स्पष्ट करू। 50

8. गोविन्द दासक काव्य नारिकेल सदृश होइतहुँ श्रुतिमाधुर्यसँ परिपूर्ण अछि—एहि उक्तिक विवेचन करू। 50

9. मिथिला भाषा रामायणक 'सुन्दरकाण्ड'क आधार पर कवीश्वर चन्दा झाक काव्य-सौष्ठवक विवेचना करू। 50

10. "'सूर्यमुखी' चेतनाक लक्षण अछि, जे सततिकाल सूर्यक दिस उन्मुख रहैत छै आ जकर प्रतिफलन हमर काव्य-पुरुषक अभीष्ट अछि"—एहि उक्तिक आधार पर 'सूर्यमुखी' फूलक वैशिष्ट्यक वर्णन करू। 50

11. "राजकमलक कथाक नारीमे मिथिलाक आदर्श, संस्कार, त्याग, समर्पणक भाव अभिव्यक्त भेल अछि"—एहि कथनक आलोकमे अपन अभिमत प्रकट करू। 50

12. निम्नलिखित अवतरणमेसँ कोनो दूक सप्रसंग व्याख्या करू : 25×2=50

(क) एहि लिपिक मिथिलाक्षर नाम नवीन थिक; एकर आदि नाम, ओ तेँ यथार्थ नाम, थिक तिरहुता। एही नामसँ एकर विकासक कालहुक सूचना भए जाइत अछि। एहि जनपदक तीरभुक्ति नाम गुप्त साम्राज्यकालक थिक, कारण गुप्तलोकनि अपन राज्यक विभागकेँ 'भुक्ति' कहथि। तीरभुक्तिक विकृत रूप थिक 'तिरहुति'। गुप्तलिपिसँ विकासेकँ पओने प्राच्यदेशक ई लिपि गुप्तोत्तरकालमे तिरहुता नामसँ प्रसिद्ध भेल।

(ख) आधक आध आध दिठि-अंचल जब धरि पेखल कान।
कत सत कोटि कुसुम-सरे जरजर रहत कि जाएत परान॥
सजनी,जानल बिहि मोर वाम।
दुहु लोचन भरि जे हरी हेरए तसु पद मोर परनाम॥
'सुनयनि' कहैत कान्ह घन सामर मोहि बीजुरि सम लागि।
'रसवति' करक परस-रस भासत हमर हृदय जनि आगि॥

(ग) कतए भवन, कतए आँगन, बाप कतए, कतए माए।
कतहु ठहोर नहि ठेहर, के कर एहन जमाए॥
कओन कएल एहो असोजन, केओ न हिनक परिवार।
जे कएल हिनक निबन्धन, धिक थिक से पँजिआर॥
कुल-परिवार एकओ नहि, परिजन भूत-बेताल।
देखि-देखि झूर होअए तन, के सहए हृदयक साल॥

(घ) "हरि अनन्त हरि-कथा अनन्ता" एहि लोकोक्तिमे हम एतबे परिवर्त्तन कर॒ऽ चाहैत छी जे हरि-कथा आ मनुक्खक कथामे कोनो भेद, कोनो अन्तर नहि छैक। हम सभ मनुक्ख छी,...... माने, हमरा सभक देह आ आत्मामे मात्र हरि, मात्र देवता नहि, दैत्य आ राक्षसक निवास स्थान सेहो अछि। अस्तु : हमरा सभक कथा,..... हमरा सभक व्यक्तित्व आ सामाजिक चरित्रक कथा अनन्त अछि, हरि कथासँ वेसी अनन्त।

(ङ) तोँ विसरल-भूलल अपनाकेँ दुर्बल मानि रहल छऽ।
तोँ सिंहक सन्तान सनातन, छागर जानि रहल छऽ।
कतऽ गेल छऽ उर्जा? तोहर रुधिर-प्रवाह कतऽ छऽ।
कतऽ गेल छऽ आस्था? जीवन-प्रति उत्साह कतऽ छऽ।
मरि ने सकबऽ कालजयी तोँ, पीबि अमृत-रस-लहरी।
जागऽ देश हमर हे भारत, जगा रहल युग-प्रहरी।

(च) नहि अछि आज्ञा तेहन, जेहन हम कौतुक करितहुँ।
लङ्कापुरी उखाड़ि प्रभुक, पद लग लय धरितहुँ॥
दशमुख सौँ कय बेरि अपन दुहु पयर धरबितहुँ।
लाँगड़िमे लपटाय बाँधि सभ लोक फिरबितहुँ॥
जननि थोड़ दिन विपति अछि, सकुल सदल रावण मरत।
गृद्ध काकगण मगन मन, लङ्कापुर डेरा करत॥

(छ) अन ने छै केँचा ने छै कौड़ी ने छै
गरीबक नेना कोना पढ़तैक रे?
उठह कवि, तोँ दहक ललकारा कने
गिरि-शिखर पर पथिक-दल चढ़तैक रे!
हमर वीणाध्वनि कने पहुँचैत जँ
सटल-पाँजर बोनिहारक कानमे
सफल होइत तखन ई स्वरसाधना
चिर-उपेक्षित जनक गौरव-गानमे।

★★★

SECTION—I

खण्ड—I

1. मैथिली भाषाक ऐतिहासिक विकासक्रमक विस्तृत विवरण प्रस्तुत करू। 50

2. कोनो बोलीकेँ भाषाक स्वरूप लेबामे कारक तत्त्व पर विचार करू। 50

3. कृष्णकाव्य ओ रामकाव्यक दृष्टिएँ मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण करू। 50

4. आधुनिक मैथिली लघुकथाक विकासमे स्व० राजमोहन झाक योगदान पर प्रकाश दिअ। 50

5. आधुनिक मैथिली कविताक स्वरूप ओ शिल्प पर विचार करू। 50

6. 'बंगला' एवं 'संथाली' भाषाक संग मैथिलीक सम्बन्धक वैशिष्ट्य पर प्रकाश दिअ। 50

SECTION—II

खण्ड—II

7. विद्यापति युगद्रष्टा एवं युगस्रष्टा छलाह, हुनक विभिन्न रचनाक आधार पर एहि बातक विश्लेषण करू। 50

8. कविवर चन्दा झा आधुनिक मैथिली साहित्यक विकासक दिशा निर्देशित कएलन्हि, एहि पर प्रकाश दिअ। 50

9. 'सूर्यमुखी'मे चित्रित कविवर आरसी प्रसाद सिंहक काव्य-प्रतिभासँ परिचय कराउ। 50

10. प्रबन्ध-संग्रहक लेखक मानक मैथिली गद्यकारक संगहि एक उच्चकोटिक अनुसंधाता सेहो छलाह, विचार करू। 50

11. राजकमल चौधरी एक रसिक शिल्पी कथाकार छथि, युक्तियुक्त विवेचन करू। 50

12. निम्नलिखित अवतरणमेसँ कोनो दू अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू : 25×2=50

(क) कंटक गाड़ि कुसुमसम पदतल मंजिर चीरहि झाँपि।
गागरि वारि ढारि कए पिच्छर चलतहँ आँगुरि चाँपि।।
माधव, तुअ अभिसारक लागि।
दुरतर पन्थ गमन धनि साधए मन्दिर जामिनि जागि।।
करयुग नयन मूँदि चलु भाविनि तिमिर पयानक आसे।
कर कंकन पन करि सुखबन्धन सिखए भुजग-गुरु पासे।।

(ख) ससन-परस खसु अम्बर रे देखल धनि देह।
नव जलधर तर चमकए रे जनि बीजुरि-रेह।।
आज देखलि धनि जाइते रे मोहि उपजल रङ्ग।
कनकलता जनि संचर रे महि निरअवलम्ब।।
ता पुनु अपरूब देखल रे कुचयुग अरविन्द।
विगसित नहि किछु कारण रे सोझाँ मुखचन्द।।

(ग) पुरुषक जाति ओकरा के की कहतै
ओकरे समाज ओकरे बात रहतै
उठा लितथि बरु भगवान हमरो
कथी लए भारी लगितिअइ ककरो

मरब तँ कानत क्यौ नहिएँ
रहब तँ क्यौ जानत नहिएँ
इहो जीवन कोनो जीवन थीक
एहिसँ कुकुर बिलाड़िए नीक

(घ) गुड़कल गुड़कल भिड़ुकल जाय
जतय अछल दुइ व्रिच्छ अकाय
जमला अर्जुन कमलानाथ
जुगुति उखाड़ल छुइल न हाथ
खसल महातरु हँसल मुरारि
भेल अपात जगत परचारि
आँगन सुन देखि नयन नोरायल
जसोमतिकाँ हिअ हाथ हेरायल

(ङ) किछुए वर्ष मे पेट मे पिल्ही, देह मे घाव-फोसरी, आँखि मे सेर-दू-सेर काँची नेने, फाटल-चीटल फराक मे नेटा-पोटा पोछैत, खरिहाने-खरिहान, गाछिए-गाछी बउआइवाली तिरू, बाँसक नवका कोपर सन कोमल, कविश्रेष्ठ वाणभट्टक श्यामांगी नायिका भ'गेली।

(च) सुख भोगल अछि, दुख देखल अछि,
दुर्लभ अछि आनन्द।
स्वप्न भेल सुख, अमर भेल दुख,
डूबल जीवन-छन्द।।
दुख ने माँगल, सुख ने त्यागल,
आएल अपनहि आप।
शीतलता ले श्रमकेँ साधल,
सहन भेल संताप।।

(छ) हम ई नहि कहैत छी जे मिथिलामे नाटक लिखले नहि गेल, से के कहि सकैत अछि? हमर अभिप्राय अछि जे मिथिलामे नाटकक अभिनय होइत छल तकर कोनो प्रमाण हमरा लोकनिकेँ नहि भेटैत अछि। तहिना मैथिली नाटकसँ हमर आशय मिथिलामे रचित नाटक नहि अछि, ने मिथिलाक कविक रचित नाटक; हम तँ मैथिली नाटकसँ बुझैत छी ओ नाटक जे मिथिलाक जनभाषामे रचित हो, मैथिलीमे हो। एहन नाटक हमरा एहि बीसम शताब्दीसँ पूर्वक नहि भेटैत अछि मुदा से जँ भेटबो करैत तँ हम ओकर नाटकीयता ताधरि स्वीकार नहि करितहुँ जाधरि ओकर सफल अभिनयक प्रमाण हमरा नहि भेटैत।

★★★